अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के रचनात्मक सहयोग से

एवं **किताबवाले** द्वारा प्रकाशित

अमृत वाङ्मय

के प्रथम 23 भाग

संपादक : बालमुकुन्द पाण्डेय
राकेश मंजुल

स्वत्व जागरण श्रृंखला

श्रृंखला संपादक : नरेंद्र शुक्ल

भारत की मौलिक एकता

वासुदेवशरण अग्रवाल

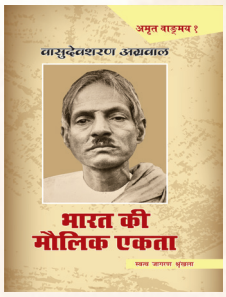

भारत की मौलिक एकता को श्रद्धापूर्वक मानने और उसके अनुसार आचरण करने की जितनी आवश्यकता इस समय है, उतनी पहले कभी नहीं हुई। यदि यह कहा जाए तो भी सच है कि आज के भारतवासी नागरिक के लिए इस एकता की पूर्ण सिद्धि के अतिरिक्त ऊपर उठने का और कोई मार्ग है ही नहीं। यदि भारत की एकता सुरक्षित है, तभी राष्ट्र जीवित रहेगा।

देश की मौलिक एकता का प्रश्न हमारे जीवन-मरण का प्रश्न है। उस पर शान्त मन से विचार करना हमारे लिये अत्यन्त आवश्यक है। इस विषय में हमारे इतिहास और अतीत जीवन की जो सामग्री है, उस पर इस पुस्तक में विचार किया गया है।

978-93-95472-12-8 (HB) | 2024 | ₹ 900.00
978-93-95472-32-6 (PB) | 2024 | ₹ 400.00

राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत का स्वाधीनता संघर्ष (1858-1947)

सतीश चन्द्र मित्तल

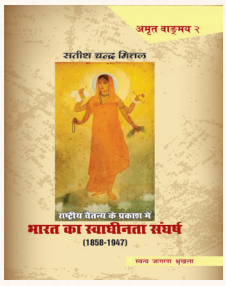

प्रस्तुत ग्रन्थ में 1857 के महासमर के पश्चात् भारत में सीधे ब्रिटिश राजनीतिक उपनिवेश की स्थापना से लेकर, उनके क्रूर दमन, दबाव, दहशत के काल में, भारत के स्वाधीनता संघर्ष के विभिन्न मार्गों का सूक्ष्म तथा विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है। इसमें भारतीय-राष्ट्रवाद की चिन्तनधारा को तीन विशिष्ट मार्गों में बाँटकर चित्रित किया गया है। इसमें पहली है सांस्कृतिक राष्ट्रवादी। क्रान्तिकारी-राष्ट्रवाद इस युग की दूसरी महत्त्वपूर्ण प्रभावी गतिविधि रही। तीसरी प्रकार के स्वाधीनता संघर्षों के प्रयत्नों को 'ध्रामक राष्ट्रवाद' का नाम दे सकते हैं। इस सन्दर्भ में इण्डियन नेशनल काँग्रेस, मुस्लिम-संस्थाओं तथा भारतीय कम्युनिस्टों के योगदान की चर्चा की गई है।

978-93-90702-37-4 (HB) | 2024 | ₹ 2400.00
978-93-95472-40-1 (PB) | 2024 | ₹ 950.00

भारत बोध श्रृंखला

श्रृंखला संपादक : डॉ. रत्नेश त्रिपाठी

बलिया में क्रान्ति और दमन : अगस्त 1942 में स्वाधीन बलिया और नौकरशाही – देवनाथ उपाध्याय

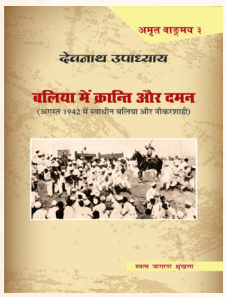

बलिया पर लिखा गया हर वाक्य या तो सरकारी नजर के हिसाब से कहा गया या फिर सीना चौड़ा करते हुए "हम हईं बागी बलिया" का ताल ठोंक कर आगे बढ़ जाता है। इससे न तो बलिया के वाकयों की भीतरी परतें खुलती हैं न ही कोई ऐसा विराम मिलता है जो समाज विज्ञान की दुनिया को रोक कर बतिया सके और यह बता सके कि यह क्षेत्र जब अपने क्रान्तिकारी तेवर में था, उसमें बड़ी भूमिका यहाँ के कृषकों की थी। 1942 का आन्दोलन जब राष्ट्रीय बनने की चाहत को पूरा आकार भी नहीं दे पाया था, उससे पहले ही बलिया में हो रही विद्रोही घटनाओं ने राजनीतिक गरमी पैदा कर दी थी। अहिंसा की गाड़ी बम्बई से चलकर बनारस, लखनऊ वाया आजमगढ़ और बलिया तक पहुँचते-पहुँचते अपने मूल अर्थ को ही त्याग चुकी थी। इस पुस्तक के माध्यम से "बलिया में क्रान्ति और दमन" का पूरा वृत्तान्त पता चलता है। 1942 के जरिये बलिया में राष्ट्रीय आन्दोलन, गाँधीवादी सिद्धान्तों का फरमान और कृषकों के ठेठ देहाती सत्याग्रह को समझाना इस पुस्तक का प्रमुख उद्देश्य है।

978-93-95472-13-5 (HB) | 2024 | ₹ 1100.00
978-93-95472-34-0 (PB) | 2024 | ₹ 450.00

स्वाधीनता आंदोलन की बाग़ी कलमें – नरेन्द्र शुक्ल

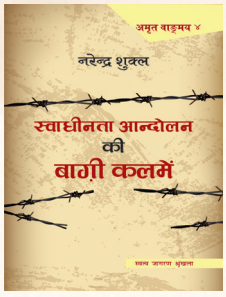

व्यवस्था मानव के इर्द गिर्द सदैव ऐसा ताना बाना बुनती है जिससे वह अपनी परिस्थिति से सन्तुष्ट रहे। किन्तु एक विचारवान प्राणी होने के कारण मानव की असन्तुष्टि उसे व्यवस्था के प्रति विद्रोही बनाती है। जिसकी अभिव्यक्ति वह अपने युग में उपस्थित अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों से करता है। ऐसे में यदि व्यवस्था के प्रति असन्तुष्टि के प्रगटीकरण के लिए विचारों को एक ऐसा साधन प्राप्त हो जाय जिसके माध्यम से एक साथ बहुत बड़े वर्ग तक अपनी बात पहुँचाई जा सके और जो इतना प्रभावशाली हो कि वह व्यवस्था के प्रति असन्तोष के भाव को मस्तिष्क से निकाल कर जनआकांक्षा में बदल दे, तो वह अपने युग में व्यवस्था के प्रति विद्रोह का वाहक बन जाता है। यह वैचारिक विद्रोह धीरे-धीरे संगठित विद्रोह में परिवर्तित हो क्रान्ति और परिवर्तन के नये रास्ते खोलता है। भारत की स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान प्रेस, अभिव्यक्ति के ऐसे ही माध्यम के रूप में उपस्थित हुआ। इसलिए औपनिवेशिक भारत में प्रेस और मुद्रित साहित्य के प्रतिबन्ध पर अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता से जुड़ा प्रश्न तो है ही, उस दौरान मुद्रित साहित्य के क्रान्तिकारी स्वरूप को देखते हुए स्वतन्त्रता आन्दोलन में वैचारिक सम्प्रेषण के चीफ़टूल के रूप में इसकी पहचान बहुत महत्वपूर्ण है।

978-93-90702-39-8 (HB) | 2024 | ₹ 700.00
978-93-95472-41-8 (PB) | 2024 | ₹ 300.00

चौरी-चौरा : राष्ट्रीय आयाम की स्थानीय घटना

हिमांशु चतुर्वेदी

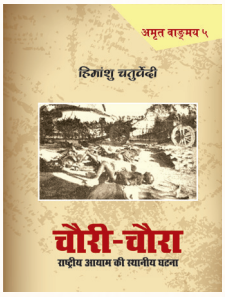

चौरी-चौरा को यदि राष्ट्रीय फलक पर समझना है तो जलियाँवाला बाग जाना होगा। एक तथाकथित सुसंस्कृत राष्ट्र ने निहत्थे भारतीयों का कत्लेआम किया। जनाक्रोश राष्ट्रीय हुआ और असहयोग आन्दोलन को इसके कारण आधार मिला। चौरी-चौरा का आक्रोश जलियाँवाला बाग की घटना का प्रत्युत्तर था, परन्तु दुर्भाग्यवश घटना ने असहयोग आन्दोलन को ही समाप्त कर दिया। विवेचना का प्रश्न है कि यह दुर्भाग्यवश था या एक सिद्धान्त की अवसरवादिता। आवश्यकता है चौरी-चौरा को उसके खण्ड कालों में समझा जाना; जिससे यह मात्र एक स्थानीय घटना न होकर, राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा को परिवर्तित करने वाली एक अति महत्वपूर्ण घटना की तरह समझा जा सके।

978-93-90702-96-1 (HB) | 2024 | ₹ 1500.00
978-93-95472-33-3 (PB) | 2024 | ₹ 600.00

सुराज गीतावली : प्रतिबन्धित सुराजी गीत संचयन

नरेन्द्र शुक्ल

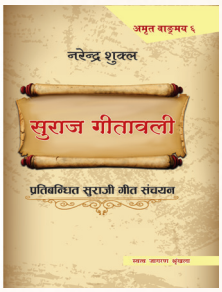

इन सुराजी रचनाओं को पढ़ने के बाद हम निश्चय ही कह सकते हैं कि गाँधी जिस तरह की अहिंसक फौज बनाना चाहते थे, उसकी मानसिकता व्यक्तित्व निर्माण के गाँधीवादी फॉमूले से भिन्न थी। व्यक्तित्व निर्माण के गाँधीवादी फार्मूले का अगर कोई पीक है तो वह सविनय अवज्ञा के दौरान पिकेटिंग के समय एक के बाद एक लहर के समान आती और हिंसक लाठियों, बन्दूक के कुन्दों और घोड़े की टापों से कुचल कर जाती, सत्याग्रही टोलियों का हाल सुनकर लगता है कि निश्चय ही यह वास्तविकता होगी।

वहीं, अहिंसक रचनाओं में क्रान्तिकारी कार्यक्रमों की पदावली का शुमार होना यह दर्शाता है कि आम जनमानस में स्वतन्त्रता आन्दोलन के तरीके को लेकर वैसा दो फाड़ नहीं था जैसा अमूमन इतिहासकारों द्वारा खड़ा किया गया है। यह रचनाएँ दर्शाती हैं कि आम जनमानस क्रान्तिकारी कार्यक्रमों और गाँधीवादी कार्यक्रमों को अपने भीतर समान रूप से जज़्ब कर रहा था और रचनाओं के माध्यम से जो बाहर आ रहा था, वह चल रहे स्वतन्त्रता आन्दोलन की समानान्तर समझ थी।

978-93-90702-63-3 (HB) | 2024 | ₹ 2700.00
978-93-95472-38-8 (PB) | 2024 | ₹ 1000.00

सरस्वती : नदी घाटी सभ्यता एवं संस्कृति

रत्नेश कुमार त्रिपाठी

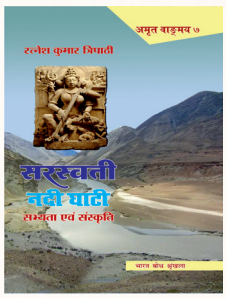

यह स्वाभाविक ही है कि भूत्थान-पतन के कारण सम्भवतः वैदिक जन अपने निवास स्थानों को छोड़कर दक्षिण तथा पूर्व की ओर पलायित होकर गंगा के आसपास जा बसे। इस प्रकार के स्थान परिवर्तन के उल्लेख हमें ऋग्वेद तथा ब्राह्मण एवं आरण्यक ग्रन्थों में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ऐसा देखने को मिलता है कि सब प्राचीन नदियों को इस प्रकार के संकटों से गुजरना पड़ा। वेद पूर्वकालीन विंध्य पर्वतीय बस्तियों का सरस्वती के किनारे स्थलान्तर करने का उदाहरण इसी तथ्य को प्रकट करता है। सरस्वती के किनारे पर कृषि प्रधान हड़प्पा संस्कृति विकसित हुई। नागरी सभ्यता का उदय तथा विकास सरस्वती के ही तटों पर हुआ।

978-93-90702-95-4 (HB) | 2024 | ₹ 1500.00
978-93-95472-37-1 (PB) | 2024 | ₹ 600.00

भारतवर्ष का अंधकार युगीन इतिहास

काशी प्रसाद जायसवाल

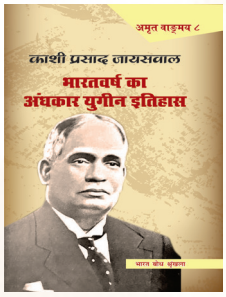

"नैव मूर्द्धाभिषिक्तास्ते।" ऐसी अवस्था में क्या यह कभी सम्भव है कि पुराण उन मूर्द्धाभिषिक्त राजाओं का उल्लेख छोड़ देंगे जो वैदिक मंत्रों और वैदिक विधियों के अनुसार राजसिंहासन पर अभिषिक्त हुए थे और जिनमें ऐसे कई राजा थे जिन्होंने आर्यों की पवित्र भूमि में एक दो नहीं बल्कि दस-दस अश्वमेध यज्ञ किये थे? यह एक ऐसा महत् कार्य है जो कलियुग के किसी ऐसे प्राचीन राजवंश ने नहीं किया था, जिसका पुराणों ने वर्णन किया है। भला ऐसा महत्वपूर्ण कार्य करनेवालों का उल्लेख पुराणों में किस प्रकार छूट सकता था? शुंगों ने दो अश्वमेध यज्ञ किये थे और शुंगों का उल्लेख पुराणों की उस सूची में है जिसमें सम्राटों के नाम दिये गये हैं। शातवाहनों ने भी दो अश्वमेध यज्ञ किये थे और पुराणों में उनका भी उल्लेख है। इसलिए जिन भार-शिवों ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे, वे किसी प्रकार छोड़े नहीं जा सकते थे। और वास्तव में वे छोड़े भी नहीं गये हैं।।

978-93-95472-16-6 (HB) | 2024 | ₹ 1600.00
978-93-95472-36-4 (PB) | 2024 | ₹ 700.00

सार्थवाह

डॉ मोती चन्द्र

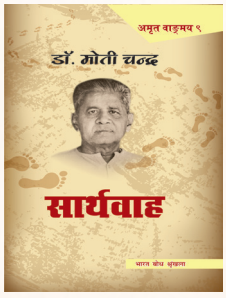

इस देश की पथ-पद्धति जानने के पहले इनके कुछ भौगोलिक आधारों को भी जान लेना आवश्यक है। भारत के उत्तर-पूरब में जंगलों से ढँकी पहाड़ियाँ और घाटियाँ हैं, जो मंगोल जाति को भारत में आने से रोकती हैं। फिर भी इन जंगलों और पहाड़ों से होकर मणिपुर और चीन के बीच एक प्राचीन रास्ता था, जिस रास्ते से चीन और भारत का थोड़ा बहुत व्यापार चलता रहता था। ईसा पूर्व दूसरी सदी में जब चीनी राजदूत चांगकियेन बलख पहुँचा। तब उसे वहाँ दक्षिणी चीन के बाँस देखकर कुछ आश्चर्य-सा हुआ। वास्तव में यूनान के ये बाँस आसाम के रास्ते मध्यदेश पहुँचते थे और वहाँ से बलख। इतना सब होते हुए भी उत्तर-पूर्वी रास्ते का कोई विशेष महत्व नहीं था, क्योंकि उसे पार करना कोई आसान काम नहीं था।

978-93-95472-15-9 (HB) | 2024 | ₹ 2000.00
978-93-95472-35-7 (PB) | 2024 | ₹ 900.00

सम्पत्ति शास्त्र

महावीर प्रसाद द्विवेदी

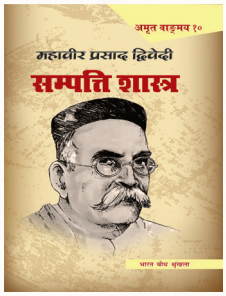

सम्पत्ति-शास्त्र को अँग्रेजी में "पोलिटिकल इकोनॉमी" कहते हैं। इस देश में किसी-किसी ने इसका नाम अर्थशास्त्र रखा है। परन्तु यह नाम इस शास्त्र का ठीक वाचक नहीं जान पड़ता। क्योंकि "अर्थ" शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। केवल हिंदी जानने वालों के मन में "सम्पत्ति" या "धन" शब्दों के सुनने से तत्काल जो भाव उदित हो सकता है वह "अर्थ" शब्द के सुनने से नहीं हो सकता। "धनविज्ञान", "सम्पत्तिविज्ञान" या "सम्पत्ति-शास्त्र" यदि इस शास्त्र का नाम रखा जाए तो वह इस शास्त्र के उद्देश्य का विशेष बोधक हो और साधारण आदमियों की भी समझ में उसका मतलब झट आ जाए। "अर्थशास्त्र" कहने से यह बात नहीं हो सकती। इसी से हमने इस पुस्तक का नाम "सम्पत्ति-शास्त्र" रखना उचित समझा।

978-93-95472-14-2 (HB) | 2024 | ₹ 2000.00
978-93-95472-30-2 (PB) | 2024 | ₹ 800.00

सनातन संस्कृति के आधुनिक प्रणेता : हनुमान प्रसाद पोद्दार

हिमांशु चतुर्वेदी

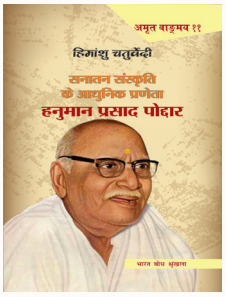

गीता प्रेस, धार्मिक पुस्तकें और हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी' एक-दूसरे के पर्याय हैं। गीता प्रेस से प्रकाशित धार्मिक ग्रन्थों से लेकर 'कल्याण' पत्रिका आध्यात्मिक क्षेत्र में अग्रदूत के रूप में विद्यमान है। सेठ जयदयाल गोयनका ने गीता प्रेस की स्थापना 1923 में की, जिसे हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने वटवृक्ष का रूप दिया। उत्तर भारत की आध्यात्मिक, सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्र में योगदान देने वाले 'भाई जी' को ऐतिहासिक दृष्टि से पिरोना महत्वपूर्ण है। गीता प्रेस के माध्यम से उन्होंने भारतीय सनातन संस्कृति की सेवा करते हुए भारत के समृद्ध ग्रन्थों-वाङ्मय एवं परम्पराओं की व्याख्या कर उनको जन-जन तक पहुँचाने का कार्य ही नहीं किया, अपितु राष्ट्रीय चेतना को भी नवीन ऊर्जा प्रदान की।

978-93-90702-55-8 (HB) | 2024 | ₹ 1250.00
978-93-95472-43-2 (PB) | 2024 | ₹ 550.00

कम्बुज देश : राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास

महेश कुमार शरण

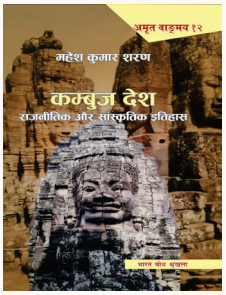

दक्षिण-पूर्वी सागरों पर भारतीय संस्कृति के विस्तार का इतिहास पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व से चौदहवीं शताब्दी ईसवी तक का है। इस संस्कृति को ले जाने का श्रेय भारतीय व्यापारियों को है, जो वाणिज्य व्यापार की श्रीवृद्धि के लिए उन देशों में गये, किन्तु वाणिज्य, सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त अपनी स्थलीय सीमा के उस पार भारत का जो प्रभाव फैला था, उसमें राजनीतिक प्रभाव भी कम नहीं था और ईसा की प्रथम शताब्दी से ही यह बात हमें देखने को मिलती है कि अनाम, कोचीन-चीन और प्रशान्त महासागरीय द्वीपों में हिन्दू राज्य अथवा हिन्दू प्रभाववर्ती राज्य थे। 'रामायण' में हमें जावा और सुमात्रा के विषय में उल्लेख मिलता है। ईसवी सन् के आरम्भ होने के पहले से ही दक्षिण भारत के बन्दरगाहों और प्रशान्तसागरीय द्वीपों के बीच आवागमन जारी था। लेकिन लोगों का भारत से जाकर इन द्वीपों में बसने का ठोस प्रमाण ईसा की पहली शताब्दी में ही मिलता है।

978-93-90702-69-5 (HB) | 2024 | ₹ 1500.00
978-93-95472-39-5 (PB) | 2024 | ₹ 650.00

हिन्दू सभ्यता

राधाकुमुद मुखर्जी

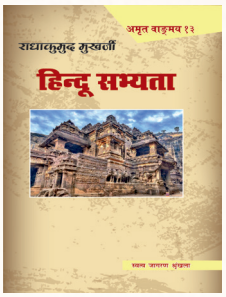

यह स्मरण रखने की बात है कि (भारत में) प्रत्येक स्थान के अलग-अलग इतिहास के उस गड़बड़झाले के पीछे अखिल भारतीय इतिहास की एक पृष्ठभूमि सदा से रही, जो राजनीतिक न होकर सांस्कृतिक थी। वह एकता भारतीय विचार और दर्शन के इतिहास में पिरोई हुई है, जो प्रादेशिक सीमाओं और शासन की छोटी-छोटी इकाइयों से ऊपर है। समस्त भारतवर्ष पर विचार और जीवन के एक-जैसे आन्दोलनों की छाप पड़ी है, जिससे एक जैसे आदर्श और एक-सी संस्थाओं का यहाँ उदय और विकास हुआ, जिनके कारण भारतीय सभ्यता संसार की अन्य सभ्यताओं से अलग पहचानी जाती है और जो उस इतिहास को 'मानव जाति के सामाजिक, धार्मिक और बौद्धिक विकास में एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में' प्रतिष्ठित करती हैं।

978-93-95472-99-9 (HB) | 2024 | ₹ 2000.00
978-81-968691-6-8 (PB) | 2024 | ₹ 850.00

भारत के प्राचीन इतिहासकार

विश्वंभर शरण पाठक

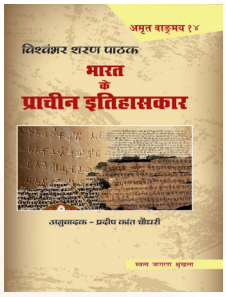

यहाँ हमारा प्रयास प्राचीन परंपराओं से प्रसारित किरणों को लघु छवियों पर केंद्रित करने का है, जिसे मध्ययुग की प्रमुख हस्तियों के साथ मिश्रित कर त्रिविमिय और सही चित्र तैयार किया जा सके। सौभाग्यवश हमारे लिए इतिहास लेखन की भृग्वंगिरस परंपरा इन युगों में भी जीवंत बनी रही, जिससे हमारे लिए प्राचीन इतिहास लेखन परंपरा को मध्यकाल की परंपराओं से जोड़ना संभव हो सका। बाण न केवल इस युग के पहले इतिहास लेखक हैं, बल्कि वह भृग्वंगिरसों की प्राचीन इतिहास लेखन परंपरा के उच्चतम शिखर का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। कल्हण के एकमात्र अपवाद को छोड़कर, जो सुबह के तारे की तरह आधुनिक इतिहास लेखन के सूर्य का सामना करने की शक्ति रखता है, बाकी सभी मध्यकालीन लेखक घिसे-पिटे रास्ते पर चलते नजर आते हैं। अत: यह अध्ययन, हालांकि सिर्फ पांच लेखकों की चर्चा करता है, फिर भी यह हिंदू इतिहास लेखन शैली का प्रतिनिधि संग्रह प्रस्तुत करता है।

978-93-95472-95-1 (HB) | 2024 | ₹ 1150.00
978-93-95472-88-3 (PB) | 2024 | ₹ 500.00

मध्यकालीन भारतीय संस्कृति – गौरीशंकर हीराचंद ओझा

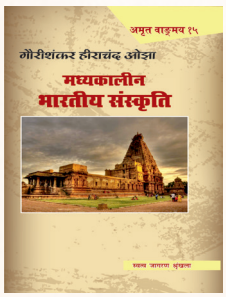

इस पुस्तक में विषय को तीन भागों में विभक्त किया गया है। पहले भाग या व्याख्यान में तत्कालीन धर्मों–बौद्ध, जैन तथा हिंदू–के भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के विकास और ह्रास तथा उस समय की सामाजिक स्थिति, वर्णाश्रम-व्यवस्था, दासप्रथा, रहन सहन, रीति रिवाज आदि पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे भाग में भारतीय साहित्य, अर्थात् कोश, व्याकरण, दर्शन, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, राजनीति, अर्थशास्त्र, शिल्प, संगीत, चित्रकला आदि विषयों की तत्कालीन स्थिति पर विचार किया गया है। तीसरे भाग में उस समय की शासन-पद्धति, ग्राम पंचायतों का निर्माण और उनके अधिकार, सैनिक व्यवस्था तथा न्यायादि पर प्रकाश डालते हुए उस दीर्घ काल में होने-वाले परिवर्तनों का संक्षेप से उल्लेख कर उस समय की आर्थिक स्थिति–कृषि, व्यापार, व्यवसाय, व्यापार-मार्ग, आर्थिक समृद्धि आदि पर भी कुछ विचार किया गया है। ऊपर लिखे हुए विषयों में से प्राय: प्रत्येक विषय इतना गम्भीर और विस्तृत है कि उन पर स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। केवल तीन व्याख्यानों में इन सबका समावेश संक्षिप्त रूप में ही हो सकता है।

978-93-95472-77-7 (HB) | 2024 | ₹ 1000.00
978-93-95472-81-4 (PB) | 2024 | ₹ 400.00

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद-चार अध्याय

सतीश चन्द्र मित्तल

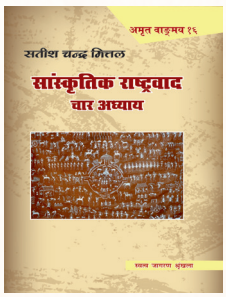

राष्ट्रवाद के सभी स्वरूपों में भारत का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद विश्व का प्राचीनतम, स्वनिर्मित तथा निरन्तर है। विद्वानों ने इसे आध्यात्मिक तथा नैतिक राष्ट्रवाद भी कहा है। इस पुस्तक में राष्ट्रीयता की भारतीय-अवधारणा, वैशिष्ट्य के साथ इसके क्रमिक विकास का वर्णन किया गया है। मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम तथा सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों के विभिन्न तत्त्वों का भी संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

इस ग्रन्थ में विश्व के सन्दर्भ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विकास, विकृति तथा विशुद्धिकरण की कहानी को चार भागों में बाँटा गया है। इसे क्रमश: संस्कृति का विस्तार, सांस्कृतिक विजय तथा सतत संघर्ष, पुनर्जागरण का काल तथा संस्कृति का संकट, में वर्गीकरण किया गया है। इसमें साथ ही इसके सन्दर्भ में पाश्चात्य भ्रान्तियों को भी स्पष्ट किया है। पुस्तक में वैदेशिक आक्रमणों के साथ, इसकी अस्मिता के लिए किये गये अक्षुण्ण प्रयासों की चर्चा की गयी है।

978-93-95472-73-9 (HB) | 2024 | ₹ 2800.00
978-93-95472-83-8 (PB) | 2024 | ₹ 12000.00

हरिशचन्द्र- भारतेन्दु बाबू की जीवनी

शिवनन्दन सहाय

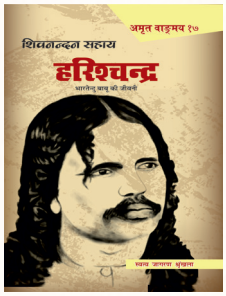

इस पुस्तक के लिखने का मुख्य उद्देश्य यह है कि मातृभाषा हिन्दी को नीरस और सारहीन समझनेवाले अँगरेजी-भाषा-रसिक जनों की हिन्दी पढ़ने में रुचि जन्मे, और वे लोग सब प्रकार की प्रकृति के अनुसार सब प्रकार के रसों से पूर्ण हरिश्चन्द्र के ग्रन्थों को पढ़कर देखें कि हिन्दी की उन्नति के लिए केवल एक व्यक्ति ने कितना यत्न तथा परिश्रम किया है एवं उसी निष्काम मातृभाषा की सेवा से वह देश-विदेश में कैसा सम्मानित हुआ है। साथ ही सचेष्ट इसकी और अधिक गौरववृद्धि के निमित्त यत्नवान हों।

978-93-95472-86-9 (HB) | 2024 | ₹ 2300.00
978-93-95472-82-1 (PB) | 2024 | ₹ 1000.00

जनपद-जनपद सम्पदा संचयन

राकेश मंजुल

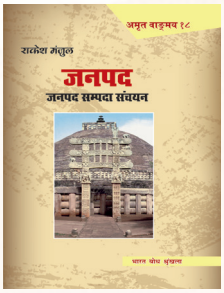

देश की जनता का नब्बे प्रतिशत भाग ग्राम और जनपदों में बसता है। उनकी संस्कृति देश की प्रधान संस्कृति है। हमारे राष्ट्र की समस्त परंपराओं को लेकर ग्राम-संस्कृति का निर्माण हुआ है। ग्रामों के समुदाय को ही प्राचीन भाषा में जनपद कहा गया है। वह भौमिक इकाई जिसमें बोली और जन-संस्कृति की दृष्टि से जनता में पारस्परिक साम्य अधिक है, जनपद कही गई है। उनकी संख्या केवल भूगोल की एक सुविधा है। उसमें आपसी विग्रह या विभेद को कोई स्थान नहीं है, जिस प्रकार विविध प्रांतीय भेद होते हुए भी राष्ट्रीय दृष्टि से हमारा देश और उस देश में बसने वाला जन-समुदाय अखंड है, उसी प्रकार प्रांतों के अंतर्गत विविध जनपदों में बसनेवाली जनता भी एक ही संस्कृति राष्ट्रीय चेतना का अभिन्न अंग है।

978-93-95472-97-5 (HB) | 2024 | ₹ 3000.00

ऋग्वैदिक आर्य और सरस्वती सिन्धु सभ्यता

शिवाजी सिंह

विगत दो दशकों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि ऋग्वैदिक सरस्वती नदी की पुनर्खोज है। इस नदी की पहचान आज विवाद से परे है। यह आर्कोसिया की अर्धन्दाब नहीं, हरियाणा, राजस्थान, चोलिस्तान एवं सिन्ध क्षेत्र से गुजरते हुए कच्छ की खाड़ी तक पहुँचने वाली घग्घर-हाकड़ा है जो अपने प्रारम्भिक क्षेत्र में आज भी सरस्वती के ही नाम से जानी जाती है। पुरातात्त्विक सर्वेक्षणों तथा सेटेलाइट फोटोग्राफी से उसके सूखे जलमार्गों का पता चल चुका है। अनेक सहायक सरिताओं से सम्बन्धित इस विशालकाया नदी का जो चित्र सामने आया है वह ऋग्वेद में वर्णित इसके रूप के सर्वथा अनुकूल है।

978-81-970271-4-7 (HB) | 2024 | ₹ 1600.00

भारतवर्ष का बृहद इतिहास-प्रथम भाग

पं. भगवद्दत्त

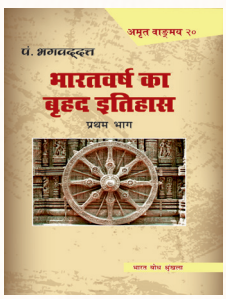

जिस देश में इक्कीस प्रकार की इतिहास परक स्वच्छ सामग्री विद्यमान थी, जिस देश के आचार्यों ने परम सूक्ष्म बुद्धि से उस सामग्री का लक्षण-पूर्वक विभाजन विशेष कर दिया था तथा जिस देश के साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने अपनी उदारधी से अत्यन्त श्रेष्ठ इतिहास लिखे, उस देश में "इतिहास-लेखन विद्या" नहीं थी यह कहना अन्याय की पराकाष्ठा तथा पक्षपात अथवा अज्ञान की चरम सीमा है।

978-81-968691-8-2 (HB) | 2024 | ₹ 3300.00
978-81-968691-9-9 (PB) | 2024 | ₹ 1400.00

भारतवर्ष का बृहद इतिहास-द्वितीय भाग

पं. भगवद्दत्त

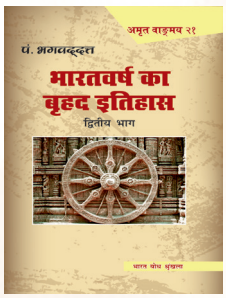

जिस देश में इक्कीस प्रकार की इतिहास परक स्वच्छ सामग्री विद्यमान थी, जिस देश के आचार्यों ने परम सूक्ष्म बुद्धि से उस सामग्री का लक्षण-पूर्वक विभाजन विशेष कर दिया था तथा जिस देश के साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने अपनी उदारधी से अत्यन्त श्रेष्ठ इतिहास लिखे, उस देश में "इतिहास-लेखन विद्या" नहीं थी यह कहना अन्याय की पराकाष्ठा तथा पक्षपात अथवा अज्ञान की चरम सीमा है।

978-81-970271-0-9 (HB) | 2024 | ₹ 3500.00

पाणिनिकालीन भारतवर्ष

वासुदेवशरण अग्रवाल

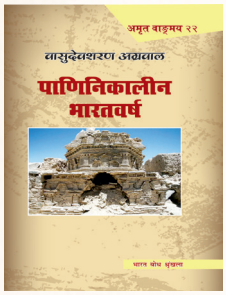

"पाणिनिकालीन भारतवर्ष" पाणिनिकृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन है। अष्टाध्यायी में लगभग चार सहस्र सूत्र हैं जिनका मुख्य उद्देश्य व्याकरण के नियमों का परिचय देना था। किन्तु इन सूत्रों में पाणिनिकालीन भाषा के अनेक ऐसे शब्द आ गये हैं जिनसे उस युग के सांस्कृतिक जीवन का प्रत्यक्ष चित्र प्राप्त होता है। पाणिनि ने अपने समय की संस्कृत भाषा की सूक्ष्म छानबीन की थी। इसके लिए उन्हें मनुष्य जीवन के प्रायः सम्पूर्ण व्यवहारों की जाँच-पड़ताल करनी पड़ी। अतएव पाणिनि का शास्त्र तत्कालीन भारतीय जीवन और संस्कृति का कोष ही बन गया है। भूगोल, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, शिक्षा और विद्या सम्बन्धी जीवन, राजनीतिक जीवन, धार्मिक जीवन और दार्शनिक विमर्श—सबके विषय में राई-राई करके पाणिनि ने सामग्री का सुमेरु ही खड़ा कर दिया था। उस सामग्री का इस ग्रन्थ में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन किया गया है।

978-81-970271-6-1 (HB) | 2024 | ₹ 3100.00

हर्षचरित- एक सांस्कृतिक अध्ययन

वासुदेवशरण अग्रवाल

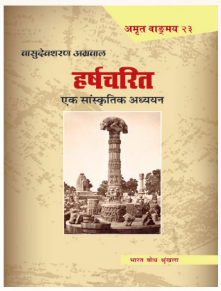

ये व्याख्यान बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् के आयोजन में 13-17 मार्च, 1951 ई० को दिये गये थे। इनमें सांस्कृतिक सामग्री की दृष्टि से बाण के हर्षचरित का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अश्वघोष से श्री हर्ष तक के एक सहस्र वर्षों का भारतीय सांस्कृतिक जीवन का प्रतिसमृद्ध चित्र संस्कृत के काव्य, नाटक, चम्पू और कथा-साहित्य से प्राप्त किया जा सकता है। यह ऐसी सामग्री है, जो किसी शिलालेख या ताम्रपत्र में तो नहीं लिखी गई, पर शताब्दियों से हमारे सामने रही है। उसके पूरे संकेत और अर्थ को समझना उचित है। भारतीय इतिहास के चित्र में पूरा रंग भरने के लिए यह आवश्यक कर्त्तव्य है।

978-81-970271-5-4 (HB) | 2024 | ₹ 1900.00

किताबवाले
7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
www.kitabwale.com
Email : kitabwale@gmail.com
Phone : 9599041956